**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
**PP. No.- 60-62**
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

# राष्ट्र के समावेशी विकास में पं. दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता

**डॉ0 योगेन्द्र सिंह**
असि0प्रो0– अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय सलेमपुर, देवरिया (उ0प्र0) भारत

Received-06.10.2023, Revised-12.10.2023, Accepted-17.10.2023 E-mail: dryogendra2012@gmail.com

***सारांशः** स्वतंत्रता के बाद भारतवर्ष में आत्मनिर्भरता एवं विकास के एक ऐसे मॉडल की तलाश थी, जो आर्थिक शोषण, असामनता, आर्थिक स्थिरता, वर्ग विग्रह, इत्यादि अनेक समस्याओं का अंत हो। पश्चिमी विकास के जो मॉडल औद्योगिक क्रान्ति के बाद विकसित हुए थे उसमें पश्चिमी आर्थिक चिंतकों ने भौतिकता एवं उपभोकक्तावादी संस्कृति को प्रमुखता प्रदान किया। मुक्त व्यापार और अहस्तक्षेप की नीति ने भारतीय उद्योग धंधो एवं हस्त शिल्प का पतन कर दिया मशीनीकरण ने भारत के स्वतंत्रता के बाद जो आर्थिक विकास का मॉडल निश्चित कर रहे थे। उसमें समावेशी विकास एवं मानववाद को समुचित स्थान नही प्राप्त हो रहा था।*

***कुंजीभूत शब्द–** आत्मनिर्भरता, आर्थिक शोषण, असामनता, आर्थिक स्थिरता, वर्ग विग्रह, औद्योगिक क्रान्ति, उपभोकक्तावादी संस्कृति।*

विकास के आर्थिक प्रतिमानों यथा जी.डी.पी., प्रति व्यक्ति आय, की जगह 4990 के दशक में आधुनिक वैश्वीकरण में मानव विकास की अवधारण को प्रमुखता दी गयी। अर्थ का चिंतन आधारभूत इकाई है। भारतीय दर्शन में इसको साध्य न मानकर साधन के रूप में विश्लेषित किया गया।

संविधान के अनुरूप विकास का वास्तविक स्वरूप राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के विकास से है। इस संदर्भ में सरकार की 'सबका साथ सबका विकास' की अवधारणा न केवल सामवेशी विकास की अपने में समाहित की है, बल्कि समाजवादी आर्थिक चिंतक एकात्म मानव बाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के अन्त्योदय विकास की अवधारणा को चरितार्थ करती है।
साथ ही साथ इस वैश्विक कालखंड विकास का मॉडल एक लालच, लोभ अथवा भयातुरता के समान अति विध्न मानसिकता की स्थिति को महसूस किया गया और भारतीय संस्कृति मूल्य व्यवस्था को महत्व देती है। अतः मानववाद का लोप हुआ।

बीसवीं शताब्दी के उत्ततरा्त में पश्चिमी विचारधारा के लोगों का पतन हुआ तथा भारत के साथ–साथ औपनिवेशिक देशों के स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई, तत्पश्चात् भारत की विकास मॉडल जब तैयार की गई तो उसमें पश्चिमी विचारधारा को सम्मिलित किया गया। जो घातक सिद्द हुई। पं. दीनदयाल जी का आर्थिक चिंतन मूल रूप से समग्रतावादी है वे मानव के विकासवादी मॉडल को महत्वपूर्ण मानते थे। पं. दीनदयाल जी अपने विचारधारा में मानव को केन्द्र में रखते है और कहते है कि हमें ऐसा कोई विकास का मॉडल बनाना होगा। जिसमें मानव केन्द्रित हो। जो कि मानव को केन्द्र मे रखकर ही बनाना चाहिए।

वैश्विक सहस्त्राब्दी विकास के लक्ष्य पूर्णत लोकतांत्रिक एवं मानवकेन्द्रित है, जो एकात्म मानववाद एवं अन्त्योदय के अवधारणा में अर्न्तनिहित है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी अर्थ नीति में "अन्त्योदय" की व्याख्या बहुत ही स्पष्ट करते हुए कहते है कि अन्त्योदय का अर्थ होता है कि "अन्तिम पंक्ति में बैठे व्यक्ति के सर्वागीण विकास से होता है। जब यदि समाज में रह रहे लोगों के बीच में सबसे छोटे गरीब, किसान अन्य को उसका विकास होने लगे चाहे वे सामाजिक हो, आर्थिक हो, सांस्कृतिक हो, राजनैतिक आदि विभिन्न पहलू हो, से होता है, लाभप्रद हो तो उसे पं. दीनदयाल जी की अन्त्योदय का नाम देते है।

अन्त्योदय पं दीनदयाल जी के अर्थनीति से एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त के रूप में उल् लेखित है। अतः पं. दीनदयाल जी ने प्रत्येक काम को स्पष्ट करते हुए कहते है कि– "काम प्रथम तो जीविकोपार्जनीय हो तथा दूसरे व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतंत्रता हो। यदि काम के बदले में राष्ट्रीय आय का न्यायोचित भाग इसे नहीं मिलता हो तो उसके काम की गिनती ढबेगार" में होगी। इस दृष्टि से न्यूनतम वेतन, न्यायोचित वितरण तथा किसी न किसी प्रकार की समाजिक सुरक्षा की व्यवस्था आवश्यक हो जाती है।"

पं. दीनदयाल जी ने अपने अर्थनीति के सम्बन्ध में अपने विचार को व्यक्त करते हुए कहते है कि "अर्थस्य पुरूषोः दासः। पं. दीनदयाल जी चूँकि पश्चिमी औद्योगीकरण को नकारते हुए भारतीय संदर्भ में जो आदर्शपूर्ण एवं समन्वित" अर्थायाम" का विश्लेषण प्रस्तुत करते है वह भारत के पम्परागत व्यवसायों को अवसर मानकर स्पष्ट करते हुए बिन्दुवार इस प्रकार करते है–

1. अर्थायाम।
2. काम का मूलभूत कर्तव्य एवं अधिकार 'सबको काम'।
3. उपभोगवाद, स्पर्धावाद व वर्गसंघर्ष का निषेध।
4. स्वामित्व को नही, स्वामित्व के केन्द्रीकरण का सवाल।
5. आर्थिक लोकतंत्र।
6. विकेन्द्रीकरण अर्थव्यवस्था एवं लघु उद्योग।
7. अवदेवमात्रि का कृषि।
8. स्वयंसेवी उत्पादन क्षेत्र।
9. श्रमिकों का स्वामित्व।

पं. दीनदयाल जी ने अपने भारत के अर्थनीति की व्याख्या करते हुए स्पष्ट करते हैं कि भारत के अब तक शासनानुसार कई योजनाएं चलाई गई है, लेकिन गत वर्ष तक निर्धन की स्थिति और भी विकट संकट में पडता जा रहा है। "करीब 20 करोड के

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

आस–पास निर्धनता के नीचे लोग जीवन–यापन कर रहे है।"

अतः स्पष्ट है कि गरीबी और निर्धरता की स्थिति में जो विषमता बढती जा रही है, चूँकि "ऑक्सफोर्ड इनेक्वालिटी रिपोर्ट (2042) "यह दर्शाया गया है कि 2047 में सृजित कुल सम्पत्ति में धनी 0/प्रतिशत लोगों का हिस्सा 73 प्रतिशत था।' उपरोक्त समस्याओं के परिदृश्य को देखकर पं. दीनदयाल जी ने व्यक्त किया है कि– "वास्तव में भारत के भाव संसार भौतिक आवश्यकताओं यहाँ के जीवन–दर्शन तथा उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों आदि को दृष्टिगत रखते हुए हमें न तो पश्चिम विकास मॉडल की आवश्यकता थी और न हीं हमारे लिए वे अनुकूल थे। पश्चिमी देशों ने अपने आवश्यकतानुसार आविष्कार किया। हमने पश्चिम में हुए आविष्कार के अनुसार अपनी आवश्यकता बना लिया। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी तर्क देते हुए स्पष्ट करते है कि पश्चिम में जनसंख्या कम होने के कारण मजदूरों की कमी थी। उन्होंने मशीनों का आविष्कार किया। हमारे पास पर्याप्त मजदूर थें, लेकिन पश्चिम के मशीन का अनुकरण करके, हमने अपने श्रमिकों को बेरोजगार कर दिया।

पं. दीनदयाल जी ने कहा कि विकास के केन्द्र में व्यक्ति केन्द्रित हो जिसमें शक्ति निहित होने के कारण राष्ट्र को विकास के मार्ग पर ले जाया जा सके। चूँकि व्यक्ति का समाज, राष्ट्र, प्रकृति तथा जैविक से परमेष्टि तक सम्बन्ध होता है, जो कि अविभाज्य होने के कारण भावपूर्ण व शोषण मुक्त समाज की कल्पना की जा सकती है। हमें सभी विचारों चाहे वह पुरातन हो या नये नीति निर्माण सभी को सम्मिलित करके उन्हे पुनः विचारानुसार जैसा भी युगानुकूल रूप से तथा स्वदेशानुकूल होना चाहिए। विचार करके ही हम एक समन्वित विकास की कल्पना कर सकते है। एक श्रेष्ठ समाज को गढा जा सकता है।

अतः पं. दीनदयाल जी ने अपने आर्थिक चिन्तन में स्पष्ट करते हुए कहते है कि– भारतीय संस्कृति के संदर्भ में काम और अर्थ में व्यष्टि, समष्टि सृष्टि तथा परमेष्टि की एकात्मकता तथा जैविक, सम्बन्धों मे विश्वास होना चाहिए। अतः अर्थ विकृति को अर्थासंस्कृति के अनुरूप चलना होगा। इससे जो वैचारिकी तथा संस्कृति स्थापित होगी। वह होगी– (1) जो जन्मा है वह खायेगा (2) कमाने वाला जिलायेगा (3) जो जायेगा वो कमायेगा।

मशीन मनुष्य की सुविधा के लिए है, उसका स्थान लेने के लिए नही। मनुष्य मशीन का निर्माता है, उसका स्वामी है, उसका गुलाम नही। उत्पादन के साधन की दृष्टि से उसका दृष्टिकोण अवश्य है, किन्तु वह मनुष्य को खाकर नही उसे खिलाकर होना चाहिए। इस दृष्टि से मनुष्य और मशीन में एक समन्वय होना चाहिए, जो प्रत्येक समाज धीरे–धीरे करता जाता है। ज्यों–ज्यों उद्योगों की उन्नति होती जाती है, उनको बाजार मिलता जाता है, मनुष्य स्वयं मशीनों का सहारा लेता है, किन्तु जब यही अस्वाभाविक रूप से किया जाता है तो हॉनि होती है। अतः भारत में कुटीर और ग्रामोद्योग ही हमारे केन्द्र हो सकते है। बड़ें–बड़ें उद्योग इन उद्योगों के हित में जहाँ चलाना आवश्यक हो, चलाये जाए, किन्तु इनके प्रति स्वार्थी बनकर नही। "आवश्यकता है कि हम अपने जीवन दर्शन का विचार कर भारतीय अर्थव्यवस्था का मौलिक निरूपण करें तथा आज की समस्याओं को यथार्थ की कंटकाकीर्ण, ऊबड़–खाबड़ किंतु ठोस भूमि पर खडे होकर सुलझाएँ।

भारत के स्व" का साक्षात्कार किये बिना हम अपनी समस्याओ को सुलझा नही पायेगें। यदि किसी क्षेत्र में संयोगवश थोडी बहुत सफलता मिल भी गई, तो उसका परिणाम हमारे लिए हितकर नही होगा। हम परानुकरण की ओर अधिक प्रवृत्त होगे। अपने स्वत्व और सामर्थ्य के विकास के स्थान पर परावलम्बन का भाव हमारे मन में घर कर जायेगा। आत्महीनता का यह भाव घुन की तरह राष्ट्र की जड़ें खोखली कर देगा। इस प्रकार जर्जर–मूल राष्ट्र कभी झंझावातों में खडा नही रह सकता। यदि हमें देश का विकास करना है तो इस प्रश्न का अंतर्मुख होकर विचार करना ही होगा।

हम जब भारत के लिए आर्थिक कार्यकम का विचार करते है, तो हमारे सम्मुख कुछ ऐसे निश्चित लक्ष्य एवं तथ्य आते है, जिन्हें हम बदलना नहीं चाहेगें, बल्कि सब प्रकार से उनका संरक्षण एवं संवर्द्धन ही हमारे प्रयत्नों का उद्देश्य होना चाहिए। प्रथम लक्ष्य होना चाहिए, अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा का सामर्थ्य उत्पन्न करना। दूसरे हमने अपने लिए एक प्रजातंत्रीय ढ़ाँचा चुना है। यदि आर्थिक समृद्धि का कोई भी कार्यकम हमारी प्रजातंत्रीय पद्धति के मार्ग में बाधक होता है, तो वह हमें स्वीकार नहीं होगा। तीसरे हमारे जीवन के कुछ सांस्कृतिक मूल्य है, जो हमारे लिए तो राष्ट्रीय जीवन के कारण, परिणाम और सूचक है तथा विश्व के लिए भी अत्यन्त उपादेय है। विश्व को इस संस्कृति का ज्ञान कराना ही हमारा राष्ट्रीय जीवनोद्देश्य हो सकता है। इस संस्कृति को गँवाकर यदि हमने अर्थ कमाया भी तो वह निरर्थक और अनर्थकारी होगा।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्रा, श्याम कार्तिक : एकात्म मानववाद तत्कालीन भारत में पुनरावलोकन, माल बुक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. उपाध्याय, दीनदयाल : भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा, राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ ।
3. लोहिया, राम मनोहर : अर्थशास्त्र, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 28.
4. उपाध्याय, दीनदयाल : भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा, अध्याय–2, भारतीय संस्कृति में अर्थ, राष्ट्र धर्म प्रकाशन, लखनऊ, 1958 पृ. 23.
5. उपाध्याय, दीनदयाल : भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा, अध्याय–2 भारतीय संस्कृति में अर्थ, राष्ट्र धर्म प्रकाशन, लखनऊ, 1958 पृ. 26.
6. उपाध्याय, दीनदयाल : भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा, अध्याय–2, भारतीय संस्कृति में अर्थ, राष्ट्र धर्म प्रकाशन, लखनऊ, 1958, मनुष्य और मशीन पृ. 77–78.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

7. शर्मा, महेश चन्द्र : पं. दीनदयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, अध्याय–7, आर्थिक चिन्तन पृ. 259.
8. Mehara, pooja 2016"8%GDP growth helped redue Poverty: UN report " the Hinu, april 2.
9. Oxford Inequality report, 2018 22 January.
10. Bharracharya, B.B (2017). Views expressed in Presidential Address of the Annual conference of the Indian economis association held at Kanpur University, Srinagar. J&K.
11. Papula T.S (2006) Emerging structure of Indian economic Implecations of growing inter economic journal Vol. 54 No. 1.
12. लेख, सबको काम ही भारतीय अर्थनीति का एकमेव मूलाधार, दीनदयाल उपाध्याय, पांनजन्य, 31 अगस्त, 1933.
13. राष्ट्र चिन्तः पं. दीनदयाल उपाध्याय, लोक हित प्रकाशन, लखनऊ, 2007, पृ.82.
14. पं. दीनदयाल उपाध्याय : विचार दर्शन, खण्ड–3 राजनीति चिन्तन, भालचन्द्र कृष्णा जी केलकर, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ.69.

*****